International Journal of Jyotish Research: 2024; 9(1): 01-05

International Journal of Jyotish Research
(वेदचक्षु)

ISSN: 2456-4427
Impact Factor: RJIF: 5.11
Jyotish 2024; 9(1): 01-05
© 2024 Jyotish
www.jyotishajournal.com
Received: 02-11-2023
Accepted: 05-12-2023

डॉ. बिपिन कुमार
ज्योतिर्विज्ञान, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत

Correspondence
डॉ0 बिपिन कुमार
ज्योतिर्विज्ञान, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत

शनि तत्व विमर्श

डॉ. बिपिन कुमार

DOI: https://doi.org/10.22271/24564427.2024.v9.i1a.207

सारांश
शनि काल पुरूष का दुःख कहा जाता है और इसे ग्रहो के मंत्रिमडल में सेवक का स्थान प्राप्त है। समाज में लोकतत्र का कारक है न्याय इसकी प्रवृत्ति है। इसलिए कठिन परिश्रम न्याय पूर्वक करने वाले व्यक्ति के लिए शनि हमेशा योग कारक होते है।

कूटशब्द : मंद, शनि, सूर्यपुत्र सौर्य काल छाया पंगु आदि।

प्रस्तावना
प्रस्तुत शोध पत्र में शनि ग्रह के विषय में शास्त्रीय विवेचना की गयी है वराहमिहिर, कल्याण वर्मा, मंत्रेश्वर महराज और अन्य प्राचीन ज्योतिर्विदो के विचार इसमें समाहित है और कतिपय आधुनिक शोध सन्दर्भ वर्णित किया गया है। नवीन शोध के अनुसार शनि भौतिक जीवन में कठिन परिश्रम करने वाले न्यायपूर्ण व्यक्ति को अत्यधिक सफलता प्रदान करते है।
शनैः शनैः चरति इति शनैश्चरः अर्थात् जो धीमे–धीमे गति करते है वही शनि है।
पृथुयशस ने होरासार में शनि की पर्यायवाची बताया है–

काणो मन्दः शनिः कृष्णः सूर्यपुत्रो यमस्तथा ।
पङ्गुः शनैश्चरः सौरिः कालश्छायासुतः समः।।[1]

नवग्रहों की श्रेणी में सब से कम गति वाला ग्रह होने से इस का नाम शनि पड़ा है। यह सूर्य से बहुत दूर है। ढाई वर्ष में एक राशि को पार करता है। पूरा राशि चक्र पार करने में इसे लगभग 30 वर्ष का समय लगता है।

शनि के स्वरूप –
वराहमिहिर का मत है कि–

"मन्दोऽलसः कपिलदृक् कृशदीर्घगात्रः। स्थूलद्विजःपरुष रोमकचोऽनिलात्मा।।"[2]

अर्थ–शनि धीमा आचरण करने वाला, आलसी, कपिल अर्थात पीला मिश्रित सफेद वर्ण दृष्टियुक्त, दुबला तथा लम्बा देहवाला, मोटेदांतो वाला होता है। इसके रोम और केश रूखे होते हैं। यह वातप्रकृतिप्रधान होता है। सूर्यपुत्र शनि दुःखदायक, काले वर्ण का होता है। स्नायु, कूड़ा–करकट फेंकने की जगह फटे–पुराने कपड़े, लोहा, शिशिर ऋतु तथा नमकीन रुचिपर शनि का अधिकार है। कल्याण वर्मा भी वराहमिहिर के अनुरूप ही शनि का वर्णन करते हैं–

"पिङ्गो निम्न विलोचनः कृशतनुः दीर्घः शिरालोऽलसः,
कृष्णाङ्गः पवनात्मकोऽतिपिशुनः स्नाय्वाततो निर्घृणः।
मूर्खः स्थूलनखद्विजोतिमलिनो रुक्षोऽश्रुचिस्तामसः,
रौद्रः क्रोधपरो जरापरिणतः कृष्णाम्बरो भास्करिः।।"[3]

अर्थ–पिङ्गलवर्ण, गहरे नेत्रों वाला, कृशदेह, लम्बाकद, नसों से व्याप्त, आलसी, कालावर्ण, वातप्रकृति, चुगुलखोर, स्नायु खाल से बलवाला, निर्दयी, मूर्ख, मोटे नाखून और मोटे दाँतोंवाला, अतिमलिन

वेश, कान्तिहीन, अपवित्र, तमोगुणी–देखने में भयंकर, क्रोधी, बूढ़ा, कालेवस्त्रोंवाला शनि है।
आचार्य वैद्यनाथ ने शनि के स्वरूप का वर्णन करते हुए कहा है कि–

"काठिन्यरोमावयवः कृशात्मा दूर्वासिताङ्गः कफमारुतात्मा।
पीनद्विजश्वारुपिशङ्ग दृष्टिः सौरिस्तमोबुद्धि रतोऽलसः स्यात् ।।"[4]

अर्थ–शनि प्रधान व्यक्ति के केश और अवयव कठिन होते हैं। इसका शरीर दुर्बल होता है। शरीर का रङ्ग दूर्वा जैसा काला होता है। इसमें कफ और वात की प्रधानता होती है। इसके दाँत मोटे होते हैं। दृष्टि पिङ्गलवर्ण की, यह तामसी बुद्धिवाला तथा आलसी होता है। शनि का उदय पृष्ठभाग से होता है। यह चौपाया, पर्वत तथा वनों में घूमनेवाला, सौ वर्ष की आयु का, मूलप्रधान होता है। इसका देवता ब्रह्मा है, इसका रत्न नीलम है। इसका प्रदेश गंगा से हिमालय तक है। यह वायुतत्वप्रधान कसैले स्वाद की रुचिवाला, निम्न दृष्टिवाटा और तीक्ष्ण स्वभाववाला होता है। तुला, मकर, कुम्भराशि में, स्त्री स्थान में, विषुव के दक्षिण अयन में, द्रेष्काण कुण्डली में, स्वगृह में, शनिवार में, अपनी दशा में, राशि के अन्तभाग में, युद्ध के समय में, कृष्ण पक्ष में, वक्री होने के समय किसी भी स्थान में, शनि बलवान् होता है।
आचार्य मंत्रेश्वर ने शनि ग्रह का स्वरूप और प्रकृति वर्णन करते हुए कहा है कि–

पंगुर्निम्नविलोचनः कृशतनुदीर्घः शिरालोऽलसःणअंगः
पवनात्मकोऽविपिशुनः स्नाय्वात्मकोनिर्घृणः।
मूर्खः स्थूलनखद्विजः परुषरोमाङ्गोऽशुचिस्तामसे,
रौद्रः क्रोधपरो जरापरिणतः कृष्णांवरो भास्करिः ॥"[5]

ताजिक ज्योतिष के विद्वान नीलकंठ जी ने शनि के स्वरूप का वर्णन किया है–

शनिविहङ्गोऽनिलवन्यसन्ध्याशूद्राङ्गनाधातुसमः स्थिरश्च।
क्रूर प्रतीची तुवरोऽतिवृद्धोत्तरक्षितोट् दीर्घसुनीललोहम् ।।[6]

शनि–पक्षी जातियों का मालिक, वायुप्रकृतिक, सन्ध्या समय बली बनचारी, शूद्रजाति पति, स्त्रोग्रह, वातपित्तकफ त्रिदोषकारक, स्थिर स्वभाव, अशुभ (पाप) ग्रह, पश्चिम दिशा का स्वामी, कर्मल रस का प्रिय, अत्यन्त वृद्ध, ऊपर भूमि का स्वामी, कद में लम्बा, अत्यन्त नीलवर्ण का है। और शनि ग्रह लौह धातु का स्वामी भी होता है।
अर्थ–शनि लंगड़ा है। इसकी आँखें गद्देदार है। शरीर दीर्घ किन्तु कृश है। नसे बहुत है। स्वभाव से आलसी है। शरीर का रङ्ग काला है। वात की प्रधानता है। स्वभाव से कठोर हृदय और चुगुलखोर है। मूर्ख है। इसके दांत और नाखून मोटे हैं। इसके शरीर के अवयव और रोम कठोर हैं। यह अपवित्र, देखने में भयानक और स्वभाव से क्रोधी है। कालेवस्त्र पहनता है। वृद्ध अवस्था है। विशेषतः तमोगुणी स्वभाव का है। निम्नश्रेणी के लोगों के निवासस्थान, अपवित्रत्थान, पश्चिमदिशा के स्वामी के स्थान पर शनि का अधिकार रहता है। स्पर्शेन्द्रिय, लोहधातु, सौ वर्ष की अवस्था, ज्ञानप्राप्ति, प्रवास, सौराष्ट्र प्रदेश–तिल, काल, वायुतत्व, ये शनि के अधिकार के विषय है।

जाड्यादिप्रतिबन्धकाश्वगजचर्मायप्रमाणानि सं,
क्लेशो व्याधिविरोधदुःखमरणस्त्रीसौख्यदासीखराः ॥[7]

जड़ता अथवा आलस्य, रुकावट, घोड़ा, हाथी, चमड़ा; आय, बहुत कष्ट, रोग, विरोध, दुःख, मरण, स्त्री से सुख, दासी, गधा अथवा खच्चर चण्डाला

विकृताङगिनो वनचरा बीभत्सदानेश्वरा–
आयुर्दायनपुंसकान्त्यजखगास्त्रेधाग्निदासक्रियाः।
आचारेतररिक्तपौरुषमृषावादित्वदीर्घानिला,
वृद्धस्नायुदिनान्तवीर्यशिशिरत्वत्यन्तकोपश्रमाः ॥[8]

चांडाल, विकृत अंगों वाले, वनों में भ्रमण करने वाले, डरावनी सूरत, दान, स्वामी, आयु, नपुंसक, अन्त्यज, खग, तीन अग्नियाँ, दासता का कर्म, अधार्मिक कृत्य, पौरुषहीन, मिथ्या भाषण, चिरस्थायी वायु, वृद्धावस्था, नसें, दिन के अन्तिम भाग में बलवान्, शिशिर ऋतु, क्रोध, परिश्रम।

कुक्षेत्रोदितकुण्डगोलकजनिर्मालिन्यवस्त्रं गृहं,
तादृग्वस्तुमनोविचारखलमैत्रीकृष्णपापानि च।
क्रौर्य भस्म च नीलधान्यमणिलोहौदार्यसंवत्सराः,
शूद्रो विट्पितृकारकोऽन्यकुलविद्यासङ ग्रहः पंगुता ॥[9]

नीच जन्मा, हरामी, गोलक, गन्दा कपड़ा, घर, बुरे विचार, दुष्ट से मित्रता, काला रंग, गन्दा काम, पाप कर्म, क्रूर कर्म, राख, काले धान्य, मणि, लोहा, उदारता, संवत्सर, शूद्र वैश्य, पित्रिकारक प्रतिनिधि, दूसरे कुल की विद्या सीखना, लंगड़ापन।

तीक्ष्णं कम्बलवस्त्रपश्चिममुखे सञ्जीवनोपायका,
ऽधोदृष्टी कृषिजोवनायुधगृहज्ञातिर्बहिः स्थानकाः।
ईशान्यप्रियनागलोकपतने सङ ग्रामसञ्चारिता,
शल्यं सीसकदुष्टविक्रमतुरुष्का जीर्णतैलेऽपि च ॥[10]

उग्रता, कम्बल, पश्चिमाभिमुख, संजीवनी के उपाय, नीचे देखना, कृषि द्वारा जीवनयापन, शस्त्रागार, जाति से बाहर स्थान वाले, ईशान दिशा का प्रिय, नागलोक, पतन युद्ध, भ्रमण, शल्य विद्या, सीसा धातु, शक्ति का दुरुपयोग, तुरक (Turk) या सुस्क, पुराना तेल।

दारुब्राह्मणतामसे च विषभू सञ्चारकाठिन्यके,
भीतिर्दीर्घनिषादवैकृतशिरोजाः सर्वराज्यं भयम् ।
छागाद्या महिषादयो रतिरतो वस्त्रादिश्रृंगारता,
मृत्यूपासकसारमेयहरणाः काठिन्यचित्तं शनेः।।[11]

लकड़ी, ब्राह्मण, तामस गुण, विष, भूमि पर भ्रमण, कठोरता, डर, लम्बा निषाद, अटपटे बालोन वाला, लोकतंत्र जनतन्त्र सत्ता, भय, बकरा, भैंस आदि एवं रति का इच्छुक, वस्त्रों से सजाना, यमराज का पुजारी, कुत्ता, चोरी, चित्त की कठोरता आदि वेद में अशनि शब्द आया हूं।अशनि का अर्थ विद्युत या वज्र। इसकी गति अचिंत्य है, अत्यन्त तीव्र है।
श्रीमद् भागवत में इसके सन्दर्भ में एक वाक्य है–

"व्रत उपष्टिशत् योजनलक्षद्वयात् प्रतीयमानः शनैश्चरः एकैकस्मिन् राशौ त्रिंशन् मासान् विलम्बमानः सर्वेनेवानुपर्येति तावद्भिरनुवत्सरैः प्रायेण हि सर्वेषामशान्तिकरः।"[12]

बृहस्पति से दो लोख योजन पर शनैश्चर दिखायी देते हैं ये तीस–तीस महीने तक एक–एक राशि में रहते हैं। अतः इन्हें सब राशियों को पार करने में तीस वर्ष लग जाते हैं। ये प्रायः सभी के लिये अशांति करने वाले हैं।
छायात्मज अर्थात् छाया का पुत्र इस संबंध में एक आख्यान प्रस्तुत है। कश्यप तनय विवस्वान् को त्वष्टा तनया संज्ञा देवी भार्या के रूप में मिली। विवस्वान (सूर्य) के तीव्र ताप तेज दीप्ति से संज्ञा अप्रसन्न रहती थी। सूर्य के निकट रहने से संज्ञा की काया संतप्त होती थी। संज्ञा के गर्भ से सूर्य के द्वारा तीन सन्तानों का जन्म हुआ– 2 प्रजापति तथा 1 कन्या। उनमें से एक प्रजापति वैवस्वत मनु तथा दूसरे प्रजापति श्राद्धदेव यम थे। कन्या का नाम यमुना

हुआ जब सूर्य का तेजस्वी रूप संज्ञा के लिये असह्य हो गया तो उसने अपने हो समान एक स्त्री को अपनी छाया से रच दिया। यह मायामयी स्त्री संज्ञा के तद्रूप थी। इस का नाम छाया हुआ। सूर्य की सेवा में छाया को छोड़ कर संज्ञा अपने पिता त्वष्टा के पास चली गई। त्वष्टा ने उसे अपने पास नहीं रखा तो वह अश्विनी का रूप धर कर विचरने लगी। उधर छाया, संज्ञा की तीनों संतानों के साथ रहती हुई सूर्य की भार्या के रूप में रहने लगी। इस दूसरी संज्ञा को संज्ञा समझते हुए सूर्य भगवान् ने उसके गर्भ से दो पुत्र उत्पन्न किया। पहलापुत्र अपने बड़े भाई वैवस्वत मनु के समान वर्ण शक्ति वाला होने से सावर्ण मनु कहलाया। उस छाया से जो दूसरा पुत्र हुआ वह शनि के नाम से जाना गया।

"मनुरेवाभवन्नाम्ना सावर्ण इति चोच्यते ।
द्वितीयो यः सुतस्तस्याः स विज्ञेयः शनैश्चरः।।"[13]

आगे चल कर सूर्य को यह तथ्य मालूम हुआ तो वे संज्ञा को पाने के लिये अपने श्वसुर त्वष्टा के पास गये। त्वष्टा ने सूर्य के तेज को कम करने तथा सुरूष देने हेतु उनका बहुत सा तेज निकाल कर सुदर्शन चक्र रचा। जिसे भगवान् धारण कर चक्रपाणि कहे जाते हैं। पहले की अपेक्षा सूर्य का रूप सौम्य एव आकर्षक हो गया। इसके बाद सूर्य ने अश्विनी बन कर चरती हुई संज्ञा के गर्भ में वीर्य का आधान कर दो (जुड़वाँ) संतानों को जन्माया। ये अश्विनी कुमार नासत्य एवं दस्त नाम से जाने जाते हैं। ये देवताओं के वैद्य हैं। यह आख्यान ज्ञान की गुत्थी है। इसे कोई–कोई ही समझता है। संज्ञा का नाम संध्या एवं सुरेणु भी है। वास्तविक संज्ञा से तीन संतानें, संज्ञा की छाया से दो संतानें तथा अश्विनी संज्ञा से भी दो संताने अर्थात् 3+2+2=7 सात संतानों के पिता होने से सूर्य को सप्ति कहते हैं।

"सप्तसप्तिर्मरीचिमान।।" (अदित्यहृदय,रामायण।)
"भ्राता शनैश्वरश्वास्य ग्रहत्वमुपलब्धवान्।
नसत्यी यी समाख्याती स्ववैद्यौ तौ बभूवतुः।।

शनि की प्रतिष्ठापना ग्रह के रूप में हुई। द्वितीय मनु (आठवें मनु) के भ्राता शनिश्चर महाराज हैं। ये लोक पूज्य ग्रह हैं। वर्तमान में सातवें मनु स्वायम्भुव का शासन है।

"द्वितीयो यः सुतस्तस्य मनोभ्रता शनैश्वरः।
ग्रहत्वं स च लेभे वै सर्वलोकाभिपूजितम्"।।[14]

छाया का रंग होता है–काला। संज्ञा कहते हैं, ज्ञान को ज्ञान का रंग है–शुक्ल। दिन को कहते हैं–संज्ञा। रात को कहते हैं–छाया। सूर्यास्त के बाद संध्याकाल प्रारंभ होता है। यही रात्रि वा छाया का शैशव रूप है। छाया=रात=अप्रकाश=अज्ञान अश्विनी को भी संध्या कहते हैं। अश्विनी संधि नक्षत्र है–मेषराशि का प्रारंभ एवं मीन राशि का अन्त। संधि (गण्ड) नक्षत्र होने से अश्विनी की संज्ञा संध्या है। यहाँ सूर्य (काल) की पत्नी (काली) के तीन रूप है संज्ञा दिन प्रकाश ज्ञान, छाया रात अन्धकार अज्ञान, सन्ध्या अश्विनी दिन–रात (ज्ञान–अज्ञान) से परे की स्थिति। जब छाया अज्ञान है तो उससे उत्पन्न होने वाला पुत्र भी अज्ञान रूप हुआ। छाया कृष्णकाय है, शनि वर्ण हुआ। वास्तव में उदयास्त सूर्य का गोला गहरे लाल वर्ण का दिखता है। गहरे रक्त वर्ण में कृष्णता होती है। पाप का रंग काला माना गया है। सूर्य अल्पपापी है किन्तु उसका पुत्र शनि अतिपापी है। क्योंकि शनि सुनील वर्ण है। सूर्य की पत्नी संज्ञा सात रूपों में वर्तमान है–दिवा, उषा, निशा, छाया, संध्या, सुरेणु और अश्विनी (नक्षत्र विशेष) इसलिये भी सूर्य को श्सप्तसप्तिःश कहते हैं। शनैः शनैः चरति, शनैश्चरः। –"ण भी शनि को मार्तण्ड कहते हैं। सूर्य का नाम मार्तण्ड होने से ऐसा है। इससे सम्बन्धित एक कथा है। कश्यप की पत्नी अदिति गर्भवती थीं। बुध ने उनसे भिक्षा माँगा। गर्भ के कारण वे शीघ्रता से चल कर भिक्षा न दे सकीं। तब बुध ने अदिति को शाप दिया कि तेरा गर्भ मृत हो जाय। यह सुन कर अदिति व्याकुल हो गई। कश्यप ने अपनी शक्ति से बुध के शाप का निवारण कर दिया। कश्यप ने कहा यह मरा नहीं है, अण्ड (गर्भ) में स्थित है। तब से सूर्य का नाम मार्तण्ड हुआ।

"न खल्वयं मृतोऽण्डस्थ इति स्नेहादभाषत।
अज्ञानात् कश्यपस्तस्यान्मार्तण्ड इति चोच्यते ॥"[15]

"मार्तण्डस्य सुतः मार्तण्डिः शनिः।" मार्तण्ड का मृत अंश शनि में अवस्थित है। शनि इसी मृतांश स प्राणियों को मारता या कष्ट देता है। यह दुःखरूप है। इसलिये, यह मारक है। मारकत्व इसका गुण है। यह उसे बुध के शाप के कारण है। अतः बुध उसका मित्र है।
शनि की साढ़ेसाती में लोग दुःख भोगते हैं। जन्म कुण्डली में जिस राशि में चन्द्रमा होता है, उस राशि से एक राशि पहले तथा एक राशि बाद तक कुल तीन राशियों में शनि का गोचर चार भयद है। शनि महाराज इन साढ़े सात वर्षों में दुःख देते हुए समस्त पापों को जला देते हैं। मनुष्य निष्पाप हो कर विरागी हो जाता है। फलतः अन्तर्मुखी हो कर आत्मचिन्तन, ईश्वर ईक्षण करता है।
शनि वृत्ति कारक है। उद्योग धंधे में लगाता है, शारीरिक श्रम वाले कार्यों में लगाता है। जन आन्दोलनों में अग्रणी भूमिका निभाता है। मर्मभेदी बात कहना, असंतोष व्यक्त करना, मनमाना करना, आत्मशंसा चाहना, अपवाद फैलाना, हाथ की सफाई दिखाना, दास वृत्ति से उपजीविका चलाना, द्रव्यापहरण करना, हिंसा पर उतारू हो जाना और अविचारपूर्वक कर्म में उद्यत होना–शनि की विशेषताएँ हैं। जीर्ण घर वा असुन्दर निवास, कृषि कर्म, भार वा बोझा ढोना इस की नियति है। शनि अशुभ ग्रह है। परपोड़ा, पराक्रम, परदेश वास, परसेवा में इस की अभिरुचि रहती है। यह ठंडा ग्रह है, क्योंकि सूर्य से बहुत दूर है। इसलिये शुभ प्रभाव होने पर शनि प्रधान व्यक्ति उच्च कोटि के विचारक एवं तत्ववेत्ता होते हैं। शनि और सूर्य दोनों परस्पर पुत्र एवं पिता हैं। दोनों का आमने सामने होना अथवा दोनों का एक साथ होना अशुभ प्रभाव उत्पन्न करता है। मेष में सूर्य–शनि एक साथ हैं अथवा, तुला में सूर्य–शनि एक साथ हैं तो सूर्य एवं शनि (पिता एवं पुत्र) में से एक उच्च का होगा तो दूसरा नीच का होगा। शनि के साथ सूर्य+मंगल का योग सदा घातक है। इसमें मृत्यु, अपघात, भयंकर रोग, बन्धन, भारी संकट, अनपेक्षित विपत्ति तथा आयु के अंत के समय का नैराश्यपूर्ण होना, निश्चित है।
शनि एवं चन्द्र को युति कम घातक है। शनि द्वारा रोहिणी नक्षत्र का पार करना शकट भेदन कहा जाता है। क्यों कि रोहिणी नक्षत्र का आकार शकट जैसा है। यह शकट भेदन लोक संहारक होता है। बुध, गुरु वा शुक्र के साथ शनि हो तो अच्छा फल देता है। परन्तु मन्द गति होने से कंजूसी से (अल्प) फल देता है। वक्री वा चन्द्र के साथ होने से शनि चेष्टा वली होता है। चेष्टाबल युक्त शनि शुभ होता है। शनि पुत्र चिन्ता उत्पन्न करता है। समय की अपेक्षा अति विलम्ब से प्रसूत होना शनि का धर्म है। 1,5,9 स्थान में शनि इस प्रकार का प्रभाव उत्पन्न करता है। शनि और गुरु का दशम केन्द्र योग जातक को राज्याधिकार के योग्य बनाता है। शनि का प्रभाव सूर्य द्वारा घटता है, परन्तु मंगल के आगे जा कर। सूर्य की दृष्टि होने से शनि का प्रभाव न्यून होता है। शनि प्रधान व्यक्ति निर्लज्ज एवं निश्चय ही दुर्गुणी होता है।
मिथुन, तुला, कुंभ राशियों में शनि का विशेष महत्व है। यदि शनि बली हो तो बहुत सम्पत्ति देता है। 1,4,5,8,9 राशियों में अनिष्ट फल देता है। यह जिस राशि में होता है, उसके आगे एवं पीछे की राशियों को पीड़ित करता है। यह विशेष कर चन्द्र को पीड़ा देता है। इसे साढ़े साती कहते हैं। साढ़े साती का विचार चन्द्र राशि से होता है। चन्द्र की साढ़े साती का परिणाम शरीर एवं कुटुंबी मनुष्यों पर पड़ता है। जन्म काल में यदि चन्द्रमा तथा सूर्य के मध्य में शनि हो तो यह अतीव दुःस्थिति है। 1,4,5,8,9 राशि पर सूर्य चन्द्र

एकत्रित हो तो शनि की साढ़े साती भयंकर एवं विशेष कष्टप्रद होती है। शनि दम्भ और मत्सर दे करके अमंगल करता है। यह दरिद्रता देता है, आयु का नाश करता है, वातरोग देता है, बुद्धि भ्रमित करता है, जीर्णशीर्ण वस्तुओं की प्राप्ति कराता है, नीचों की संगति कराता है तथा निकृष्ट निवास देता है।
शनि के बलहीन होने से भाग्यहीनता होती है। यह पैर में व्रण करता है। अधिक श्रम कराता है, थकान से शैथिल्य देता है तन्द्रा भ्रान्ति, भीति तथा पिशाच से पीड़ा देता है भयानक ज्वर एवं अपंगता का कारक है। शनि का धनुषाकार मण्डल है। अंगुल 2, कश्यप गोत्र तथा कृष्ण रंग है। इसका वाहन गीध है, है समिधा शमी है। दान द्रव्य नीलम, लोहा, सोना, काली उड़द, कुलथी, तेल कडुवा, काला कम्बल, नौलावस्त्र, नीला फूल, काली गौ भैंस कस्तूरी खड़ाऊ एवं उपानह।

दान–समय–शनिवार सायंकाल ।
जड़ी–विच्छोल की जड़ कपित्थ मूल।
"नीलाञ्जन समाभसं रविपुत्र यमाग्रजम् छायामार्तण्ड सम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।"

जो मनुष्य सत्य और धर्म में तत्पर रह कर चिन्ता रहित हो धर्म के अनुष्ठान में लगे हुए हैं, उनकी ओर अकाल मृत्यु आँख उठा कर देख भी नहीं सकती।

"सत्ये धर्मे च निरतान् मानवान् विगतज्वरान्।
नाकाले धर्मिणो मृत्युः शक्नोति प्रसमीक्षितुम ॥"[16]

शनि संन्यासी ग्रह है। एक स्थान पर अधिक समय तक टिकने नहीं देता। यह सब कुछ छीन लेता है अथवा सर्वस्व दान करा देता है। यह दरिद्रता एवं अकिञ्चनता की साक्षात् मूर्ति है। स्वयं ऐसा होकर दूसरों को सम्पन्न बनाता है। यह दुःख के कोष का स्वामी है। दुःख देता है तथा दुःख लेता है। शनि ग्रह तत्त्व विमर्श शनैःशनैः चरति इति शनिश्चरः अर्थात जो धीरे धीरे चलता है वह शनि है।
ग्रहों के कक्षाक्रम में सबसे दूर का ग्रह है। गुरु से भी इसकी कक्षा बड़ी में है। यह बहुत चमकीला अथवा प्रकाशमान नहीं तथा टिमटिमाता नहीं है। इसका रंग फीका, राख जैसा निस्तेज है। इसकी गति बहुत मन्द है। राशिचक्र की परिक्रमा यह ग्रह 29 वर्ष, 5 मास, 27 दिन 5 घंटों में पूरी करता है। इसकी मध्यम गति 2 कला, 1 विकला है। दैनिक गति 3 से 6 कला रहती है तथा यह दक्षिण की ओर 2 अंश 49 कला रहता है। यह 140 दिन वक्री रहता है तथा वक्री होते समय और मार्गी होते समय 5 दिन स्तंभित रहता है।
शनि के अधिकृत स्थानों में रेगिस्तान, जंगल, अज्ञात घाटियां, गुफाएं, गह्वर, पर्वत, कब्रिस्तान, चर्च का मैदान, खंडहर, कोयले की खानें, मैली बदबूदार जगहें, कार्यालय आदि का समावेश होता है। इस ग्रह का स्वभाव शीतल, रूक्ष और उदासीन है। यह पुरुषग्रह पृथ्वीतत्व का स्वामी है। दुर्भाग्य लानेवाला, एकांतप्रिय, शनि पापग्रह है। बृहत् संहिताकार आचार्य वराहमिहिर ने शनैश्वरश्वाराध्याय में, शनैश्वर किस वर्ण का कैसा फल देता है–इस विषय पर प्रकाश डाला है–

अण्डजहा रविजो यदि चित्रः क्षुद्भयकृद्यदि पीतमयूखः।
शस्त्रभयाय च रक्तसवर्णो भस्मनिभो बहुवैरकरश्च ।।"[17]

यदि शनि का वर्ण चितकबरा दिखे (कई रंगों का संयोग चित्र वर्ण होता है।) तब अण्डज पक्षियों का नाश, पीली किरणों वाला हो तो दुर्भिक्ष, महंगाई अन्न की कमी होती है। लाल रंग वाला शनि युद्ध भयकारक व राख के वर्ण का शनि परस्पर राज्यों में बहुत वैरभाव बढ़ाता है। पराशर ने कहा है कि जिस रंग का दिखे, वह रंग जिस वर्ण जाति का हो (जातकोक्त नियम से) उसी का विनाश होता है। श्वेत, रक्त, पीत, कृष्ण क्रमशः ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र के वर्ण माने जाते हैं।

वैदूर्यकान्तिविमलः शुभकृत् प्रजानां बाणातसीकुसुमवर्णनिभश्च शस्तः।
यं चापि वर्णमुपगच्छति तत्सवर्णान् सूर्यात्मजः क्षपयतीति मुनिप्रवादः।।"[18]

वैदूर्यमणि (Cat's Eye) लहसुनिया की रंगत वाला शनि प्रजाहितकारक, नीलकृष्ण वर्ण चमकीला हो अर्थात् अलसी के पुष्प के समान अति नीला (Blue & Black) है। मुनि जनों ने ऐसा कहा है कि जिस रंग का शनि हो, उसी वर्ण की जाति का नाशक होता है।

शनि का मूलत्रिकोण–कुम्भ शनि का उच्च तुला राशि का 20 अंश शनि का स्वगृह मकर और कुम्भ।

लग्नस्थ शनि का फल

स्वोच्चस्वकीयभवने क्षितिपालतुल्यो लग्नेऽर्कजे भवति देशपुराधिनाथः।
शेषेषु दुःखगदपीडित एव बाल्ये दारिद्रय कर्मवशगो मलिनोऽलसश्च।।[19]

यदि कुण्डली में लग्नस्व शनि, तुला वा मकर वा कुम्भ राशि का हो तो जातक देश या नगर का स्वामी, राजा के समान होता है। अवशिष्ट राशियों में लग्नस्य शनि हो तो जातक–दुःखी व बाल्यावस्था में रोग से पीडित दरिद्री, कायर्यों के वश में वा कामी, दूषित तथा आलसी होता है।

द्वितीयभावस्थ शनि का फल

विकृतवदनोऽर्थभोक्ता जनरहितो न्यायकृत्कुटुम्बगते।
पश्चात्परदेशगतो जनवाहनभोगवान् सौरे।।[20]

यदि कुण्डली में द्वितीय भाव में शनि हो तो जातक–विकृत मुखवाला अर्थात् मुख का रोगी, धन भोगी, मनुष्यों से होन, न्यायकर्ता, पीछे परदेशगामी तथा मनुष्य व सवारी का सुख भोगने वाला होता है।

तृतीय भावस्थ शनि का फल

मलिनः संस्कृतदेहो नीचोऽलसपरिजनो भवति सौरे।
शूरो दानानुरतो दुश्चिक्यगते विपुलबुद्धिः ॥[21]

यदि कुण्डली में तृतीयभाव में शनि हो तो जातक–दूषित, संस्कार से युत देहवाला दुष्ट आलसी मनष्यों से यक्त, वीर, दानी तथा बड़ा बुद्धिमान् होता है।

दुःखी स्याद्गृहयानमातृवियुतो बाल्ये सरुग्बन्धुभे।।[22]

यदि जन्म कुण्डली में शनि चौथे भाव में हो तो मनुष्य गृहहीन, यानहीन और मातृहीन होता है। ऐसा व्यक्ति बचपन में रोगी भी रहता है। चतुर्थ सुख स्थान है। शनि यहां बैठकर सुख को नष्ट कर देता है इसलिये ऐसा मनुष्य सदैव दुःखी रहता है। चौथे घर से माता, मकान, वाहन आदि का विचार किया जाता है इसलिये इनके सुख में भी कमी करता है।

भ्रान्तो ज्ञानसुतार्थहर्षरहितो धीस्थे शठो दुर्मतिः।[23]

यदि पंचम में शनि हो तो मनुष्य शठ (शैतान) बौर दुष्ट बुद्धि वाला होता है ज्ञान, सुत, हर्ष तथा धन इन चारों से रहित होता है–अर्थात् इन चीजों के सुख में कमी करता है। ऐसा मनुष्य भ्रमण करता है अथवा उसकी बुद्धि भ्रान्त रहती है।

बह्वाशी द्रविणान्वितो रिपुहतो धृष्टश्च मानी रिपौ।[24]

यदि छठे घर में शनि हो तो जातक बहुत भोजन करने वाला, घनी, अपने शत्रुओं का नाश करने वाला, घृष्ट (ढीठ) एवं अभिमानी होता है।

सप्तम भावस्थित शनिफल

बदः ज़नः कृशांङ्गः, कमफ़हमो" मानवो हिर्ज़।
चानो वा स्याज्जुहलो,हफ़्तुमख़ाने यदा भवति ।।[25]

भावार्थ–शनि सातवें घर में हो तो जातक दुर्बलता से क्षीण शरीर वाला होता है। उसकी स्त्री कुरूपा होती है। वह अल्पबुद्धि होता है, कदाचित् इसीलिए स्वभावतया निरर्थक बकवास करता है।

बीमारश्च हरीसोऽपि", दगलबाज़श्चश दोज़ख़ी' मनुजः।
कि जुहलो हश्तुमखाने, भवति बखीलः कृपालुनोश भीरुः।।[26]

भावार्थ–आठवें घर में शनि हो तो जातक रोगी और डरपोक होता है। वह दया माया ममता से हीन तथा कंजूस होता है। लालची भी होता है। दूसरों को धोखा देने में, उनसे कपट करने में नहीं हिचकिचाता । वह ऐसे पापकर्म करता है कि नर्क दोज़ख़ में जाने योग्य होता है ।

भाग्यार्यात्मजतातधर्मरहितो मन्दे शुभे दुर्जनो,।।
यदि नवम में शनि हो तो भाग्यहीन, घनहीन, सन्तानहीन, पितृ–हीन, घर्महीन, दुष्ट होता है।

मन्त्री वा नृपतिर्धनी कृषिपरः शूरः प्रसिद्धोऽम्बरे।।[27]

यदि दशम में शनि हो तो उत्कृष्ट फल है। ऐसा व्यक्ति राजा हो या राजा का मन्त्री हो, अत्यन्त धनी, प्रसिद्ध और शूर हो और कृषि कार्य में तत्पर हो। पहले कृषि कार्य सबसे उत्तम व्यवसाय माना जाता था इसीलिये ऐसा लिखा है। आधुनिक समय में इसका अर्थ करना चाहिये कि उत्तम व्यवसाय करे।

बह्वायुः स्थिरसंपदायसहितः शूरो विरोगो धनी,।।[28]

यदि ग्यारहवें घर में शनि हो तो आय सहित, शूर, निरोगी (स्वस्थ), घनी, दीर्घायु और स्थिर सम्पत्ति बाला हो।

निर्लज्जार्थसुतो व्ययेऽङ्गविकलो मूर्खो रिपुत्सारितः॥[29]

बारहवें भाव में शनि हो तो अनिष्ट फल है। ऐसा व्यक्ति निर्लज्ज, घन हीन, पुत्र से वंचित, विकलांग (शरीर के किसी भाग में विकलता) और मूर्ख होता है। शत्रु से पराजित होता है। हमारा अनुभव है कि द्वादश में शनि दाँतों को भी खराब करता और नेत्रों को भी हानि पहुंचाता है।

पाकेऽर्कजस्य निजदारसुतातिरोगान–वातोत्तरान्कृषिविनाशमसत्प्रलापम् ।
कुस्त्रीरतिं परिजनैर्वियुतिं प्रवास– माकस्मिकं स्वजनभूमिसुखार्थनाशम्।।[30]

शनि की महादशा में जातक की स्त्री या पुत्र को रोग होता है, स्वयं को भी वात आदि की पीड़ा हो, खेती नष्ट होती है, वाणी का प्रलाप, खराब स्त्री से रति, परिजनों से वियोग, स्वजन–भूमि–सुख–अर्थ का नाश होता है।

रवितनयदशायां राष्ट्रपीडाप्रहार–प्रतिजनितविभूतिः प्रेष्यवृद्धाङ्गनाप्तिः।
पशुमहिषवृषाप्तिः पुत्रदारप्रपीडा, पवनकफगुदार्तिः पादहस्ताङ्गतापः।।[31]

शनि की दशा में राष्ट्र की पीड़ा, प्रहार ,विरोधी से लाभ, वृद्ध स्त्री की प्राप्ति होती है। पशु भैस बैल की प्राप्ति, पुत्र ओर पत्नी की पीड़ा, वात कफ और गुदा रोग से कष्ट एवं हाथ पैर में गर्मी होती है।

सन्दर्भ

1. होरासार 2/39
2. बृहज्जातक ग्रहयोनि प्रभेदाध्याय 11
3. सारावली 4/27
4. जातकपारिजात–ग्रहस्वरूपगुणाध्याय–59
5. फलदीपिका 2/14
6. ताजिकनीलकंठी ग्रहस्वरूप 7
7. उत्तरकालामृत कारकत्व खण्ड–46
8. उत्तरकालामृत कारकत्व खण्ड–47
9. उत्तरकालामृत कारकत्व खण्ड–48
10. उत्तरकालामृत कारकत्व खण्ड– 49
11. उत्तरकालामृत कारकत्व खण्ड–50
12. भागवत 5/23/16
13. महाभारते हरिवंशे 8/20
14. श्री महाभारते खिल भागे हरिवंशे 9/65
15. हरिवंशे 9/5
16. महाभारत खिल हरिवंशे 51/4
17. बृहत्संहिता शनैश्चरचाराध्याय 20
18. बृहत्संहिता शनैश्चरचाराध्याय 21
19. सारावली 30/74
20. सारावली 30/75
21. सारावली 30/76
22. फलदीपिका 8/22
23. फलदीपिका 8/22
24. फलदीपिका 8/22
25. खेट कौटुकम 82
26. खेट कौटुकम 82
27. फलदीपिका 8/24
28. फलदीपिका 8/24
29. फलदीपिका 8/24
30. फलदीपिका 19/13
31. फलदीपिका 19/23